तित्थयर

वर्ष २२ अंक-७ अक्टूबर १९९८

जैन भवन

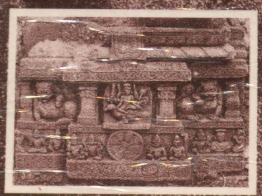

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard De-oiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur-261001 (U.P.)
Ph : 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta-700 001
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
Fax : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन
कलकत्ता

वर्ष - २२ अंक - ७, अक्टूबर १९९८

संपादन
लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : **Tithayar**. P-25 Kalakar Street. Calcutta - 700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary. Jain Bhawan. P-25 Kalakar Street. Calcutta - 700 007

Subscription for one year : Rs. 55.00. US $ 20.00.
for three years : 160.00. US $ 60.00.
Life Membership : India : Rs. 1000.00. Foreign : US $ 160.00.

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25 Kalakar Street. Calcutta - 700 007 and Printed by her at Surana Printing Works. 205 Rabindra Sarani Calcutta - 700 007. Phone : 239-4393

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	प्रतीकोपासना : मेरी दृष्टि में	ललित कुमार नाहटा	१४५
२.	जैन धर्म का प्राचीन इतिहास	डा° हीरालाल जैन	१५३
३.	श्रावक जीवन	आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी	१६१
४.	राजा सम्प्रति	--	१६५

आवरण चित्र-पाकबिरा से ७वीं से १०वीं शताब्दी की प्राप्त जैन मूर्तिया एवं मन्दिर ।

Composed by
COMPU LASER GRAPHICS, 9, Srimani Ghat Lane, Rishra-712248, Hooghly.

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥

-(दश० अ० ६ गा० ११)

सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई भी नहीं चाहता । इसीलिए निर्ग्रन्थ (जैन मुनि) घोर प्राणि-वध का सर्वथा परित्याग करते हैं ।

प्रतीकोपासना : मेरी दृष्टि में

ललित कुमार नाहटा

प्रतीकोपासना को आध्यात्मिक जगत में प्रवेश की प्रारम्भिक व अत्यावश्यक अवस्था जानकर स्वीकार किया जाना चाहिए। प्रारम्भिक अवस्था में साधक को साध्य की आवश्यकता होती ही है। साधना के उच्च स्तर पर पहुंचने के बाद संभव है कि कुछ महापुरूषों के लिए इन साधनों/माध्यमों का आलम्बन आवश्यक न हो, परन्तु फिर भी उन्हें यह कहने का कोई अधिकार नहीं कि इन साधनों का आश्रय लेना अनुचित है। "बाल्य यौवनादि का जन्मदाता है" तो क्या किसी वृद्ध पुरूष को अपने बचपन या युवावस्था को पाप या बुरा कहना उचित होगा ?

परमात्मा की मूर्तिपूजा कोई पापाचार नहीं है वरन् वह तो अविकसित मन के लिए उच्च आध्यात्मिक भाव को ग्रहण करने का माध्यम है, उपाय है। परमात्मा की मूर्ति के माध्यम से सरलता से ब्रह्म भाव का अनुभव हो सकता है तो क्या उसे पाप कहना ठीक होगा ? और जब वह उस अवस्था से परे पहुँच गया है तब भी उसके लिए मूर्तिपूजा को भ्रमात्मक कहना उचित नहीं है।

अपनी-अपनी मान्यतानुसार सभी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रतीकोपासना करते हैं। मुसलमान धर्म के अनुयायी भी नमाज के वक्त अपने आप को काबा की मस्जिद में खड़ा अनुभव करते हैं। मस्जिद का एक विशेष आकार, प्रकार या रूप भी तो प्रतीक ही है उनके शुद्ध धार्मिक स्थल का। इसाईयों का गिरजाघर भी पवित्र स्थान का प्रतीक है। इसाईयों के प्रोटेस्टेण्ट समुदय में क्रास के चिन्ह को वही स्थान प्राप्त है जो इसाईयों के केथोलिक समुदाय में धार्मिक मूर्तियों को है। गुरूद्वारा सिक्ख सम्प्रदाय के धार्मिक स्थान का प्रतीक है, उसमें उनका ग्रन्थ भी पूजन वन्दन के लिए प्रतीक स्वरूप ही है।

उपासना में मूर्तिपूजा का प्रतीकात्मक महत्व तो है ही, दर्शनात्मक

महत्व भी है । दृश्य वह संदेश दे देता है जो हजार शब्द भी नहीं दे सकते। स्वयं की इन्द्रियों द्वारा किया गया अनुभव (देखकर, सुनकर, सूंघकर, छूकर, चखकर) १०० वर्षो के अध्ययन से बढ़कर है । अगर आप पूर्ण श्रद्धा से अपने श्रद्धेय की मूर्ति या चित्र का दर्शन करते हैं तो उसमें असीम सुख व शान्ति की प्राप्ति होती है जो किसी भी आनन्द से कम नहीं । उसी श्रद्धेय की मूर्ति या चित्र, प्रारम्भिक अवस्था में साधक को आसानी से ध्यानावस्था में ले जाकर साधना की उस ऊंचाई पर ले जाता है जिसके बाद साधक को साध्य के सहारे की आवश्यकता नहीं होती ।

चित्र देखने मात्र से ही क्षण के एक छोटे से हिस्से में ही मन में विचार/भाव परिवर्तन होता है । उदाहरणार्थ अपने श्रद्धेय/आराध्य का चित्र देख मन में अथाह श्रद्धा उत्पन्न होती है, अपने पूर्वजों का चित्र देख मन में गौरव के भाव आते हैं, किसी योद्धा या वीर पुरूष का चित्र देख कर मन में वीरता के भाव उमड़ते हैं, किसी भी बालक का चित्र देख वात्सल्य भाव मन में आते हैं जब कि रावण, कंस या शत्रुओं के चित्र देख मन में घृणा भाव या प्रतिशोध की भावना उत्पन्न होती है आदि आदि । जब भिन्न-भिन्न चित्रों को देखकर मन के भावों में तत्क्षण परिवर्तन आते हैं तो अपने आराध्य प्रभु की मूर्ति के दर्शन मात्र से ही अंतस्थल में वीतरागता के भाव जागृत होंगे, इसमें किंचित मात्र संदेह नहीं ।

परमात्मा की प्रतिमा के समक्ष जाते ही मन में श्रद्धा उमड़ पड़ती है, विनम्रता आ जाती है, मन में समर्पण के भाव हिलोरे लेने लगते हैं । इस शताब्दी के महान चिंतक श्री रजनीश के शब्दों में, 'मंदिर में जब मूर्ति के चरणों में आप सर रखते हैं तो सवाल यह नहीं है कि वे चरण परमात्मा के हैं या नहीं, सवाल इतना ही है कि वह जो चरण के समक्ष झुकने वाला सिर है, वह परमात्मा के सामने झुक रहा है या नहीं । वे चरण तो निमित्त मात्र हैं । उन चरण का कोई प्रयोजन नहीं है । वह तो आप को झुकने को कोई जगह बनाने की व्यवस्था की है ।'

पूज्य स्वामी शिवानन्द सरस्वती के कथनानुसार– 'मनोविज्ञान भी इस तथ्य से सहमत है कि प्रतीकोपासना द्वारा मन की एकाग्रता अनायास मिलती है । प्रारम्भिक साधकों के लिए प्रतीकोपासना या मूर्तिपूजा का बहुत बड़ा महत्व है । मन को एक बारगी ब्रह्म में टिकाना बहुत मुश्किल है । साधना

के क्षेत्र में उतरने के लिए पहले-पहल एक आलम्बन की आवश्यकता होती है। यह बाहरी पूजा है। इसके सहारे भगवान के रूपैश्वर्य का स्मरण किया जाता है। इस स्मरण से साधक की मनोवृत्ति धीरे-धीरे अन्तर्मुखी होती जाती है और वह ईश्वर के सच्चिदानन्दमय स्वरूप को पहचानने के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व को भी पहचानने लगता है। कालान्तर में यह पहचान-बुद्धि ईश्वरत्व को ही स्मरण नहीं करती, अपितु स्वयं को उनसे अभिन्न साबित करती है। इस प्रकार मूर्ति पूजा की साधना उत्तम और उत्कृष्ट है।'

'सैनिक के लिए ध्वज सब कुछ है। ध्वज से उन्हें प्रेरणा मिलती है। इसके सम्मान को वे अपना सम्मान तथा अपमान को अपना अपमान समझते हैं। ध्वज की मर्यादा की रक्षा के लिए वे आत्माहुति देने के लिए भी उद्यत रहते हैं। भक्तजनों का भी प्रतिमा के साथ ऐसा ही लगाव है।'

कुछ लोग ऐसा भी बोलते हैं कि परमात्मा तो सर्वव्यापक, निर्गुण और निराकार है। फिर प्रतिमा में निबद्ध कैसे होगा ? अच्छी बात है। लेकिन क्या लोग परमात्मा को सर्वत्र देखकर तदनुकूल आचरण करते हैं ? वास्तविक रहस्य उनके अहंकार में छिपा है ? अहंकार से अभिभूत होकर वे प्रतिमा को नमस्कार नहीं करते। भगवान ही उनका कल्याण करें।

"श्री जिनेश्वर देव की साधना जिस प्रकार उनके नाम स्मरण से होती है, उनके गुण स्मरण से होती है, उनके पूर्वापर के चरित्रों के श्रवण से होती है, उनकी भक्ति से होती है, उनकी आज्ञाओं के पालन से होती है, उसी प्रकार उनके आकार, मूर्ति या प्रतिबिम्ब की भक्ति से भी होती ही है,"- यह सत्य जब तक स्वीकार न किया जाय तब तक श्री जिनेश्वर देवकी कृत उपासना भी अपूर्ण ही रहती है।

नाम की भक्ति को स्वीकार करने के बाद आकार की भक्ति की उपेक्षा करना तो और भी भयानक भूल है। उपास्य का नाम केवल उसके गुणों को लक्ष्य कर नहीं होता परन्तु उसके देहाकार को लक्ष्य कर होता है। यदि उपास्य का नाम केवल उसके गुणों को लक्ष्य कर होता तो प्रत्येक उपास्य को भिन्न-भिन्न नाम देने की आवश्यकता ही नहीं रहती। विभिन्न उपास्यों के समान गुण होते हुए भी उनके देहाकार आदि समान नहीं होते इसीलिए ही प्रत्येक का नाम अलग-अलग दिया हुआ रहता है। देहाकार के नाम की भक्ति का फल मानते हुए भी साक्षात देहाकार की भक्ति को निष्फल मानना

बुद्धि की जड़ता के सिवाय और कुछ नहीं है। नाम यदि कल्याणकारी है तो यह नाम जिस स्वरूप का है वह स्वरूप अधिक कल्याणकारी है, इसमें किसी भी बुद्धिशाली व्यक्ति के दो मत हो ही नहीं सकते। नाम एवं आकार के बिना अरूपी उपास्य अथवा उनके गुणों का ग्रहण सर्वथा असंभव है।

उदाहरण स्वरूप एक मुसलमान अपने आराध्य की प्रतिमा को सीधी तरह से मानने से इन्कार करता है फिर भी एक छोटी मूर्ति और उसके अंगों की भक्ति के बदले उसके हृदय में पूर्ण मस्जिद, मस्जिद का पूरा आकार तथा इसके एक-एक अवयव की भक्ति आ ही पड़ती है। मूर्ति में विश्वास नहीं रखने वाला कट्टर मुसलमान मस्जिद की एक-एक ईंट को मूर्ति की तरह ही पवित्रता की दृष्टि से देखता है तथा उसकी रक्षा हेतु अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करता। मूर्ति पर नहीं, परन्तु मस्जिद की पवित्रता पर उसका इतना विश्वास बैठ जाता है कि उसके लिए वह अपने प्राण देने अथवा दूसरे के प्राण लेने को तैयार हो जाता है। मूर्ति के अपमान के स्थान पर उसे मस्जिद का अपमान खटक जाता है।

मुस्लिम बाह्य से मूर्तिपूजक न होने पर भी जैसे हृदय से अपने इष्ट की मूर्ति का पुजारी है वैसे ही कोई आर्य समाजी, ब्रह्मसमाजी अथवा प्रार्थनासमाजी, कबीर, पंथी, नानक पंथी, बाइसपंथी, तारणपंथी अथवा तेरापंथी का हृदय भी इष्ट की मूर्ति की भक्ति की उपेक्षा नहीं कर सकता। अपने इष्ट एवं आराध्य की प्रतिमा अथवा चित्र का अपमान इनमें से कोई भी सहन नहीं कर सकता। मूर्ति पूजक अथवा अपूजक दोनों को ऐसे प्रसंगों पर समान आंतरिक वेदना होती है, फिर भी जब आकार को नहीं मानने की बात होती है तब ऐसा ही लगता है कि ऐसी बातें केवल अज्ञानजनित ही हैं, विश्व के पदार्थो की वास्तविक व्यवस्था के अज्ञान से ही ऐसी बातों का जन्म होता है।

योगी चेतनानंद कहते हैं :- "परमात्मा के अमूर्त रूप की कल्पना ठीक वैसी ही है जैसे अमूर्त अग्नि की कल्पना। अग्नि हर जगह व्याप्त है लेकिन अमूर्त रूप में। ताप के लिए अग्नि का प्रकट होना अर्थात् मूर्त रूप में प्रकट होना आवश्यक है अमूर्त रूप में अग्नि से ताप नहीं मिल सकता। अग्नि पत्थर में है, लकड़ी में है, घास में है, माचिस की तीली में है, लेकिन पत्थर, लकड़ी, घास या दियासलाई ताप प्रदान नहीं कर सकती, कारण वहां अग्नि

अमूर्त है । जहां पत्थर, लकड़ी. घास या दियासलाई रगड़ खाते हैं अग्नि प्रकट होती है व ताप प्रदान करती है । इसलिए मूर्त रूप का ही महत्व है ।''

प्रतीकोपासना के बिना व्यक्ति की वैसी ही स्थिति है जैसे तीरंदाज हवा में तीर चलाता है । तीरंदाज जब तक किसी प्रतीक को अपना लक्ष्य नहीं बनायेगा तब तक उसका तीर चलाना व्यर्थ है । पृथ्वीराज नेत्रहीन होकर भी आवाज के माध्यम से लक्ष्य पर तीर चला कर अपनी सोच को पूर्ण कर सका । यहां साधक ने अपने साध्य तक पहुँचने के लिए कान का सहारा ले आवाज को साधन बनाया उसी तरह उपासक को साध्यको प्राप्त करने के लिए साधन को माध्यम बनाना पड़ता है । यह बात और है कि उपासक साध्य को प्राप्त करते समय साधन को छोड़ देता है । इसका अर्थ यह नहीं कि बिना साधन के वह साध्य तक पहुंच गया ।

उदाहरणार्थ 'मुझे दिल्ली से श्री सम्मेत शिखर तीर्थ जाना है' यहां साधक मैं हूँ, साध्य सम्मेत शिखर तीर्थ, पहुंचने के लिए रेल या बस साधन है । रेल मार्ग तय करने के उपरान्त मुझे श्री सम्मेत शिखर जी तीर्थ के लिए साधन (रेल) को त्यागना पड़ेगा तभी मंजिल पर पहुंच पाऊंगा लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि मंजिल पर पहुंचने के लिए जब साधन को छोड़ना ही है तो साधन का उपयोग क्यों करूं ? अगर ऐसा सोच लिया तो मैं दिल्ली में ही रह जाऊंगा कभी अपनी मंजिल पर नहीं पहुंच पाऊंगा । उसी तरह आत्मा का परमात्मा से साक्षात्कार के लिए प्रतीकोपासना साधन है । साक्षात्कार के समय प्रतीक की आवश्यकता नहीं लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि जब अन्त में प्रतीकोपासना को त्यागना ही है तो अपनायें किसलिए । अपनाते है मंजिल तक पहुंचने के लिए व त्यागते हैं मंजिल मिल जाने के समय ।

परम् पूज्य पन्यास प्रवर जैन मुनि श्री भद्रंकर विजय जी गणिवर्य के शब्दों में- ''उपास्य की अनुपस्थिति में उसकी उपासना उपासक के लिए किसी मकान के प्लान के समान है । मकान की अनिर्मित अवस्था में कुशल कारीगर उसके प्लान को ही बार-बार देखकर भवन निर्माण के कार्य को पूरा कर सकता है । जब तक मकान पूरा नहीं बन जाता कारीगर को वह प्लान हर घड़ी अपनी नजरों के सामने रखना पड़ता है ठीक उसी भांति

अपनी आत्मा को उपास्य सम बनाने हेतु उपासक को, जब तक उपास्य जैसी निर्मलता प्राप्त नहीं हो जाती तब तक, उपास्य की स्थापना को प्रतिपल अपने सम्मुख रखना ही पड़ता है, यह सर्वथा स्वाभाविक है ।''

कुछ मूर्ति पूजा के विरोधी सन्त मूर्ति को मात्र पाषाण मानते हैं/कहते हैं जबकि पाषाण (पत्थर) व पाषाण से बनी मूर्ति से अन्तर तो निश्चित है, जैसे एक कोरे कागज व एक चित्र सहित कागज में अन्तर है या यों कहें कि एक कोरे कागज व छपे हुए रूपये के नोट में अन्तर है । कोरे कागज पर पैर रखकर चलने में संकोच नहीं लेकिन उसी पर अपने आराध्य का चित्र या मंत्र छपा हो या रूपये का मूल्य छपा हो तो क्या पांव रखने की हिम्मत जुटा पायेंगे ? बैंक का चैक जब तक हस्ताक्षरित न हो तब तक उस चैक का मूल्य नहीं, मात्र हस्ताक्षर करते ही वह लाखों करोड़ों या अरबों की कीमत का हो सकता है । वैसे ही पाषाण व पाषाण की मूर्ति का अन्तर समझें । पाषाण की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद तो वह परम आदरणीय एवम् वन्दनीय हो जाती है जैसे कोरा चैक हस्ताक्षरित होने के उपरान्त महत्वपूर्ण हो जाता है (बशर्ते उस खाते में उस सममूल्य का रूपया जमा हो ।) जब कोई कागज पर लिखने मात्र से उसके मूल्य में उसके प्रति भाव में अन्तर आ जाता है तो एक पाषाण को मूर्ति का रूप देने के बाद उसके प्रति भावों में अन्तर न आए, यह कैसे सम्भव है ?

परमात्मा की मूर्ति का विरोध करने वाले पाषाण व धातु की मूर्ति को पाषाण व धातु से अधिक कुछ नहीं मानते । मैंने एक अमूर्तिपूजक सन्त, जो अपने सम्प्रदाय का नेतृत्व करते हैं, उन्हें लिखा था कि आप मूर्ति को मात्र पाषाण या धातु न मानकर जिस व्यक्ति विशेष या वस्तु विशेष की मूर्ति है उसकी मूर्ति मानें । परमात्मा की मूर्ति को परमात्मा मानें तो मिथ्यात्व हो सकता है पर परमात्मा की मूर्ति को परमात्मा की मूर्ति मानना कैसे मिथ्यात्व होगा ? मूर्तिपूजक भी परमात्मा की मूर्ति का पूजन-वन्दन करते समय भावना से/साधन के माध्यम से साध्य का पूजन-वन्दन करते हैं । धर्म तो है ही भावना प्रधान । मूर्ति का इस भावना से पूजन वन्दन, कि हम परमात्मा का पूजन-वन्दन कर रहे हैं, फल निश्चित ही मिलेगा ।

कल्पना कीजिए :- आपने मूर्तिकार के यहाँ एक पाषाण पड़ा देखा आपके मन में कोई विचार परिवर्तन नहीं हुआ । आपने अपने पूर्वजों की

या अपने आराध्य की मूर्ति बनाने को मूर्तिकार को कहा व एक निश्चित समयोपरान्त उस मूर्तिकार के पास गए वहां पर उस पत्थर के स्थान पर उसी पत्थर से बनी अपने पूर्वजों की या आराध्य की मूर्ति देखी तो अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हुई, गौरव का अनुभव हुआ, श्रद्धा मन में उमड़ पड़ी आदि-आदि। ऐसा क्यों होता है क्या कभी आपने सोचा। पत्थर तो पत्थर है लेकिन कुशल मूर्तिकार द्वारा उसका एक निश्चित रूप दे देने के कारण आप उसे पत्थर न मानकर जिसकी मूर्ति है उसी का रूप मानेंगे व उसी के अनुरूप मन के भाव परिवर्तित होंगे।

मूर्तिपूजा का विरोध किन परिस्थितियों में व कब हुआ, यह चिन्तन व शोध का एक गम्भीर विषय है। इसके साथ ही इस गहराई में भी जाने की आवश्यकता है कि मूर्तिपूजा के विरोध का आधार क्या है ? इस विषय पर शोधकार्य अमूर्तिपूजक अथवा मूर्तिपूजा का विरोध करने वाले भी अपने विद्धान संत/साध्वियों द्वारा करा सकते हैं, यदि वे तटस्थ व पूर्वाग्रह से मुक्त होकर कर सकें। क्या सही मायनों में विरोध की शुरूआत मूर्तिपूजा से हुई या मूर्तिपूजा की पद्धति से विरोध हुआ ? मूर्तिपूजा में आडम्बर के कारण मूर्तिपूजा का विरोध या मूर्तिपूजा में आयी रूढ़िवादिता को समाप्त करने के लिए मूर्तिपूजा का विरोध प्रारम्भ हुआ ? या फिर मुगलों द्वारा मन्दिर व मूर्ति तोड़े जाने के कारण एक गुट ने निर्णय लिया कि नए सिरे से मन्दिर व मूर्तियां न बनाई जायें। वही गुट कालान्तर में मूर्ति व मन्दिर का विरोधी कहलाने लगा। या मुगलों के आतंक के कारण परिस्थितिवश मूर्तिपूजा व मन्दिर जाना बन्द किया गया या मुगलों की खुशामदी करने के लिए कुछ लोगों ने मूर्तिपूजा को गलत बताना शुरू किया या समाज में अपने अस्तित्व की पहचान बनाने के लिए अपनी एक नई सोच समाज को देने के नाम पर मूर्तिपूजा का विरोध किया।

कारण कुछ भी रहा हो भारत में मूर्तिपूजा के विरोध का फैशन या जन्म या मूर्तिपूजा विरोधी सोच का जन्म मुगलों के भारत में आने के बाद हुआ यह ध्रुव सत्य है। क्योंकि किसी भी नई विचारधारा के जन्म में आस-पास के वातावरण का प्रभाव ही प्रमुख होता है।

जब भी इस विषय पर शोध की बात चलती है तो मूर्तिपूजा का विरोध करने वाले हरदम इसी की खोज पर जोर देते हैं कि मूर्तिपूजा कब

से शुरू हुई और क्यों हुई एवम् इसके प्रमाण के लिए जिद करते हैं। अपनी आस्था के कमजोर होने के भय से जानबूझ कर इस बात की खोज करने का प्रयास नहीं करते कि इसका विरोध कब से या क्यों हुआ ? मूर्तिपूजा क्यों शुरू हुई, इसका कारण तो इसी लेख में मिल जाता है व कब से शुरू हुई, यह प्रमाणित करना उतना ही मुश्किल है जितना कि व्यक्ति अपने पूर्वजों की प्रथम पीढ़ी को प्रमाणित करे। दूसरी तरफ यह तो प्रमाण उपलब्ध है कि मूर्तिपूजा का विरोध कब से शुरू हुआ व इस बात की खोज भी संभव है कि इसका विरोध क्यों हुआ ? जिसके प्रमाण उपलब्ध हैं जिसकी खोज सम्भव है, उसपर तो चर्चा नहीं की जाती और जिसके प्रमाण प्राप्त करना असम्भव है, उसके लिए आग्रह किया जाता है मात्र पूर्वाग्रह के कारण या अपनी कमजोर होती दिखाई पड़ती आस्था के कारण।

मेरा विनम्र अनुरोध है कि अपने समस्त पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर हमारे विद्वान/शोधार्थी शोध करें कि भारत में मूर्तिपूजा का विरोध कब, क्यों और कहां से प्रारम्भ हुआ ? निश्चित रूप से इस शोध के परिणाम से देश में इस विषय को लेकर एकमत बनेगा और भ्रम दूर होगा।

जैन धर्म का प्राचीन इतिहास

डा हीरालाल जैन

वैदिक साहित्य के यति और व्रात्य–

ऋग्वेद में मुनियों के अतिरिक्त यतियों का भी उल्लेख बहुतायत से आया है। ये यति भी ब्राह्मण परम्परा के न होकर श्रमण-परम्परा के ही साधु सिद्ध होते हैं, जिनके लिए यह संज्ञा समस्त जैन साहित्य में उपयुक्त होते हुए आज तक भी प्रचलित है। यद्यपि आदि में ऋषियों, मुनियों और यतियों के बीच ढारमेल पाया जाता है, और वे समान रूप से पूज्य माने जाते थे। किन्तु कुछ ही पश्चात् यतियों के प्रति वैदिक परम्परा में महान् रोष उत्पन्न होने के प्रमाण हमें ब्राह्मण ग्रंथों में मिलते हैं, जहां इन्द्र द्वारा यतियों को शालावृकों (श्रृगालों व कुत्तों) द्वारा नुचवाये जाने का उल्लेख मिलता है (तैतरीय संहिता २, ४, ९, २; ६, २, ७, ५, ताण्डय ब्राह्मण १४, २, २८-१८, १, ९) किन्तु इन्द्र के इस कार्य को देवों ने उचित नहीं समझा और उन्होंने इसके लिए इन्द्र का बहिष्कार भी किया (ऐतरेय ब्राह्मण ७, २८)। ताण्डय ब्राह्मण के टीकाकारों ने यतियों का अर्थ किया है 'वैदविरूद्ध नियमोपेत, कर्मबिरोधिजन, ज्योतिष्टोमादि अकृत्वा प्रकारान्तरेण वर्तमान' आदि इन विशेषणों से उनकी श्रमण-परम्परा स्पष्ट प्रमाणित हो जाती है। भगवद्गीता में ऋषियों मुनियों और यतियों का स्वरूप भी बतलाया है, और उन्हें समान रूप से योग साधना में प्रवृत्त माना है। यहां मुनि को इन्द्रिय और मन का संयम करने वाला, इच्छा, भय व क्रोध रहित, मोक्षपरायण सदा मुक्त के समान माना है (भ° गी° ५, २८) और यति को काम-क्रोध-रहित, संयत-चित्त व वीतराग कहा है (भ° गी° ५, २६, ८, ११ आदि) अथर्ववेद के १५ वें अध्याय में व्रात्यों का वर्णन आया है। सामवेद के ताण्डय ब्राह्मण व लाट्यायन, कात्यायन व आपस्तंबीय श्रौतसूत्रों में ब्रात्यस्तोमविधि द्वारा उन्हें शुद्ध कर वैदिक परम्परा में सम्मिलित करने का भी वर्णन है। ये वैदिक विधि से 'अदीक्षित व संस्कारहीन' थे, वे अदुरूक्त

वाक्य को दुरूक्त रीति से, (वैदिक व संस्कृति नहीं, किन्तु अपने समय की प्राकृत भाषा) बोलते थे, वे 'ज्याहृद' (प्रत्यंचा रहित धनुष) धारण करते थे। मनुस्मृति (१० अध्या) में लिच्छवि, नाथ, मल्ल आदि क्षत्रिय जातियों को व्रात्यों में गिनाया है। इन सब उल्लेखों पर सूक्ष्मता से विचार करने से इसमें सन्देह नहीं रहता कि ये व्रात्य भी श्रमण परम्परा के साधु व गृहस्थ थे, जो वेद-विरोधी होने से वैदिक अनुयायियों के कोप-भाजन हुए हैं। जैन धर्म के मुख्य पांच अहिंसादि नियमों को व्रत कहा है। उन्हें ग्रहण करनेवाले श्रावक देश विरत या अणुव्रती और मुनि महाव्रती कहलाते हैं। जो विधिवत् व्रत ग्रहण नहीं करते, तथापि धर्म में श्रद्धा रखते हैं, वे अविरत सम्यग्दृष्टि कहे जाते हैं। इसी प्रकार के व्रतधारी व्रात्य कहे गए प्रतीत होते हैं, क्योंकि वे हिंसात्मक यज्ञविधियों के नियम से त्यागी होते हैं। इसीलिए उपनिषदों में कहीं कहीं उनकी बड़ी-प्रशंसा भी पाई जाती हैं, जैसे प्रश्नोपनिषद् में कहा गया हैं– **व्रात्यस्त्वं प्राणेक ऋषिरत्ता विश्वस्य सत्पतिः** (२, ११)। शांकर भाष्य में व्रात्य का अर्थ 'स्वभावत एक शुद्ध इत्यभिप्रायः' किया गया है। इस प्रकार श्रमण साधनाओं की परम्परा हमें नाना प्रकार के स्पष्ट व अस्पष्ट उल्लेखों द्वारा ऋग्वेद आदि समस्त वैदिक साहित्य में दृष्टिगोचर होती है।

तीर्थंकर नमि–

वेदकालीन आदि तीर्थंकर ऋषभनाथ के पश्चात् जैन पुराण परम्परा में जो अन्य तेईस तीर्थंकरों के नाम या जीवन-वृत्त मिलते हैं, उनमें बहुतों के तुलनात्मक अध्ययन के साधनों का अभाव है। तथापि अंतिम चार तीर्थंकरों की ऐतिहासिक सत्ता के थोड़े बहुत प्रमाण यहां उल्लेखनीय हैं। इक्कीसवें तीर्थंकर नमिनाथ थे। नमि मिथिला के राजा थे, और उन्हें हिन्दू पुराण में भी जनक के पूर्वज माना गया है। नमि की प्रव्रज्या का एक सुंदर वर्णन हमें उत्तराध्ययन सूत्र के नौवें अध्याय में मिलता है, और यहां उन्हीं के द्वारा वे वाक्य कहे गए हैं, जो वैदिक व बौद्ध परम्परा के संस्कृत व पालि साहित्य में गूँजते हुए पाए जाते हैं, तथा जो भारतीय अध्यात्म संबधी निष्काम कर्म व अनासक्ति भावना के प्रकाशन के लिए सर्वोत्कृष्ट वचन रूप से जहां तहां उद्धृत किए जाते हैं। वे वचन हैं–

सुहं वसामो जीवामो जैसिं मों रणत्थि किंचण।

मिहिलाए डज्झभाणीए रण मे डज्झइ किंचण ॥
(उत्त° ९-१४)
सुसुखं वत जीवाम येसं तो नत्थि किंचनं ।
मिथिलायां दहमामाय न मे किंचि अदय्हथ ॥
(पालि-महाजनक जातक)
मिथिसायां प्रदीप्तायां न मे किञ्चन दह्यते ॥
(म° भा° शांतिपर्व)

नमि की यही अनासक्त वृत्ति मिथिला राजवंश में जनक तक पाई जाती है । प्रतीत होता है कि जनक के कुल की इसी आध्यात्मिक परम्परा के कारण वह वंश तथा उनका समस्त प्रदेश ही विदेह (देह से निर्मोह, जीवन्मुक्त) कहलाया और उनकी अहिंसात्मक प्रवृत्ति के कारण ही उनका धनुष प्रत्यंचा-हीन रूप में उनके क्षत्रियत्व का प्रतीकमात्र सुरक्षित रहा । सम्भवत यही वह जीर्ण धनुष था, जिसे राम ने चढ़ाया और तोड़ डाला । इस प्रसंग में जो व्रात्यों के 'ज्याहृद' शस्त्र के संबंध में ऊपर कह आए हैं, वह बात भी ध्यान देने योग्य है ।

तीर्थंकर नेमिनाथ–

तत्पश्चात् महाभारत काल में बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ हुए । इनकी वंश परम्परा इस प्रकार बतलाई गई हैं– शौरीपुर के यादव वंशी राजा अंधकवृष्णी के ज्येष्ठ पुत्र हुए समुद्रविजय, जिनसे नेमिनाथ उत्पन्न हुए । तथा सबसे छोटे पुत्र थे वसुदेव, जिनसे उत्पन्न हुए वासुदेव कृष्ण । इस प्रकार नेमिनाथ और कृष्ण आपस में चचेरे भाई थे । जरासंध के आतंक से त्रस्त होकर यादव शौरीपुर को छोड़कर द्वारका में जा बसे । नेमिनाथ का विवाह-सम्बन्ध गिरिनगर (जूनागढ़) के राजा उग्रसेन की कन्या राजुलमती से निश्चित हुआ । किन्तु जब नेमिनाथ की बारात कन्या के घर पहुंची और वहां उन्होंने उन पशुओं को घिरे देखा, जो अतिथियों के भोजन के लिए मारे जाने वाले थे, तब उनका हृदय करूणा से व्याकुल हो उठा और वे इस हिंसामयी गार्हस्थ प्रवृत्ति से विरक्त होकर, विवाह का विचार छोड़, गिरनार पर्वत पर जा चढ़े और तपस्या में प्रवृत्त हो गए । उन्होंने केवल-ज्ञान प्राप्त कर उसी श्रमण परम्परा को पुष्ट किया । नेमिनाथ की इस परम्परा को विशेष देन प्रतीत होती है– 'अहिंसा को धार्मिक वृत्ति का मूल मानकर उसे

सैद्धांतिक रूप देना।' महाभारत का काल ई° पूर्व १००० के लगभग माना जाता है। अतएव ऐतिहासिक दृष्टि से यही काल नेमिनाथ तीर्थंकर का मानना उचित प्रतीत होता है। यहां प्रसंगवश यह भी ध्यान देने योग्य है कि महाभारत के शांतिपर्व में जो भगवान् तीर्थवित् और उनके द्वारा दिए गए उपदेश का वृत्तान्त मिलता है, वह जैन तीर्थंकर द्वारा उपदिष्ट धर्म के समरूप है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ–

तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म बनारस के राजा अश्वसेन और उनकी रानी वर्मला (वामा) देवी से हुआ था। उन्होंने तीस वर्ष की अवस्था में गृह त्यागकर सम्मेदशिखर पर्वत पर तपस्या की। यह पर्वत आज तक भी पारसनाथ पर्वत नाम से सुविख्यात है। उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त कर सत्तर वर्ष तक श्रमण धर्म का उपदेश और प्रचार किया। जैन पुराणानुसार उनका निर्वाण भगवान् महावीर के निर्वाण से २५० वर्ष पूर्व और तदनुसार ई° पूर्व ५२७+२५०=७७७ वर्ष में हुआ था। पार्श्नाथ का श्रमण-परम्परा पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा जिसके परिणामस्वरूप आज तक भी जैन समाज प्रायः पारसनाथ के अनुयाइयों की मानी जाती है। ऋषभनाथ की सर्वस्व-त्याग रूप आकिञ्चन मुनिवृत्ति, नमि की निरीहता व नेमिनाथ की अहिंसा को उन्होंने अपने चातुर्याम रूप सामयिक धर्म में व्यवस्थित किया। चातुर्याम का उल्लेख निर्ग्रन्थों के सम्बन्ध में पालि ग्रन्थों में भी मिलता है और जैन आगमों में भी। किन्तु इनमें चार याम क्या थे, इसके संबंध में मतभेद पाया जाता है। जैन आगमानुसार पार्श्वनाथ के चार याम इसप्रकार थे- (१) सर्वप्राणातिकम से विरमण, (२) सर्व मृषावाद से विरमण, (३) सर्ब अदत्तादान से विरमण, (४) सर्व बहिस्थादान से विरमण। पार्श्वनाथ का चातुर्यामरूप सामायिक धर्म महावीर से पूर्व ही सुप्रचलित था, यह दिग°, श्वे° परम्परा के अतिरिक्त बौद्ध पालि साहित्य गत उल्लेखों से भलीभांति सिद्ध हो जाता है। मूलाचार (७, ३६-३८) में स्पष्ट उल्लेख है कि महावीर से पूर्व के तीर्थंकरों ने सामायिक संयम का उपदेश दिया था, तथा केवल अपराध होने पर ही प्रतिक्रमण करना आवश्यक बतलाया था। किन्तु महावीर ने सामायिक धर्म के स्थान पर छेदोपस्थापना संयम निर्धारित किया और प्रतिक्रमण नियम से करने का उपदेश दिया (मू° १२९-१३३)। ठीक यही

वात भगवती (२०, ८, ६७५, २५, ७, ७८५), उत्तराध्ययन आदि आगमों में तथा तत्वार्थ सूत्र (९, १८) की सिद्धसेनीय टीका में पाई जाती है। बौद्ध ग्रंथ अंगु० निकाय चतुक्कनिपात (वग्ग ५), और उसकी अट्ठकथा में उल्लेख है कि गौतम बुद्ध का चाचा 'वप्प शाक्य' निर्ग्रन्थ श्रावक था। पार्श्वपत्यों तथा निर्ग्रन्थ श्रावकों के इसी प्रकार के और भी अनेक उल्लेख मिलते हैं, जिनसे निर्ग्रन्थ धर्म की सत्ता बुद्ध से पूर्व भलीभांति सिद्ध हो जाती है।

एक समय था, जब पार्श्वनाथ तथा उनसे पूर्व के जैन तीर्थंकरों व जैन धर्म की उस काल में सत्ता को पाश्चात्य विद्वान् स्वीकार नहीं करते थे। किन्तु जब जर्मन विद्वान् हर्मन याकोबी ने जैन व बौद्ध प्राचीन साहित्य के सूक्ष्म अध्ययन द्वारा महावीर से पूर्व निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय के अस्तित्व को सिद्ध किया, तबसे विद्वान् पार्श्वनाथ की ऐतिहासिकता को स्वीकार करने लगे हैं, और उनके महावीर निर्वाण से २५० वर्ष पूर्व निर्वाण प्राप्ति की जैन परम्परा को भी मान देने लगे हैं। बौद्ध ग्रन्थों में जो निर्ग्रन्थों के चातुर्याम का उल्लेख मिलता है और उसे निर्ग्रन्थ नातपुत्र (महावीर) का धर्म कहा है, उसका सम्बन्ध अवश्य ही पार्श्वनाथ की परम्परा से होना चाहिए, क्योंकि जैन सम्प्रदाय में उनके साथ ही चातुर्याम का उल्लेख पाया गया है, महावीर के साथ कदापि नहीं। महावीर, पांच व्रतों के संस्थापक कहे गए हैं। बौद्ध धर्म में जो कुछ व्यवस्थाएं निर्ग्रन्थों से लेकर स्वीकार की गई हैं, जैसे उपोसथ, (महावग्ग २, १,१), वर्षावास (म० ३, १,१) वे भी पार्श्वनाथ की ही परम्परा की होनी चाहिए, तथा बुद्ध को जिन श्रमण साधुओं का समकालीन पालि ग्रन्थों में बतलाया गया है, वे भी पार्श्वनाथ परम्परा के ही माने जा सकते हैं।

तीर्थंकर वर्धमान महावीर-

अन्तिम जैन तीर्थंकर भगवान महावीर के माता-पिता तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की सम्प्रदाय के अनुयायी थे-ऐसा जैन आगम (आचारांग ३, भावचूलिका ३, सूत्र ४०१) में स्पष्ट उल्लेख मिलता है। यह भी कहा गया है कि उन्होंने प्रव्रजित होने पर सामायिक धर्म ग्रहण किया था और पश्चात् केवलज्ञानी होने पर छेदोपस्थापना संयम का विधान किया (आचारंग २,१५,१०,१३)। उनके पिता सिद्धार्थ, कुंडपुर के राजा थे, और उनकी

माता त्रिशला देवी लिच्छवि वंशी राजा चेटक की पुत्री थी। उनका पैतृक गोत्र नाय, नाघ, नात (संस्कृत ज्ञातृ) था। इसी से वे बौद्ध पालि ग्रन्थों में नातपुत्त के नाम से उल्लिखित किए गए हैं। भगवान का जन्मस्थान कुंडपुर कहां था, इसके संबंध में पश्चात्कालीन जैन परम्परा में भ्रान्ति उत्पन्न हुई पाई जाती है। दिगम्बर सम्प्रदाय ने उनका जन्मस्थान नालन्दा के समीप कुंडलपुर को माना है, जबकि श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने मुंगेर जिले के लछुआड़ के समीप क्षत्रियकुंड को उनकी जन्मभूमि होने का सम्मान दिया है। किन्तु जैन आगमों व पुराणों में उनकी जन्मभूमि के संबंध में जो बातें कही गई हैं, वे उक्त दोनों स्थानों में घटित होती नहीं पाई जाती। दोनों परम्पराओं के अनुसार भगवान की जन्मभूमि कुंडपुर विदेह देश में स्थित माना गया है (ह.पु. २,४; उ.पु. ७४,२५१) और इसी से महावीर भगवान को विदेहपुत्र, विदेह-सुकुमार आदि उपनाम दिए गए है और यह भी स्पष्ट कहा गया है कि उनके कुमारकाल के तीस वर्ष विदेह में ही व्यतीत हुए थे। विदेह की सीमा प्राचीनतम काल से प्रायः निश्चित रही पाई जाती है। अर्थात् उत्तर में हिमालय, दक्षिण में गंगा, पूर्व में कौशिकी और पश्चिम में गंडकी। किन्तु उपयुक्त वर्त्तमान में जन्मभूमि माने जाने वाले दोनों ही स्थान कुंडलपुर व क्षत्रियकुंड, गंगा के उत्तर में नहीं, किन्तु दक्षिण में पड़ते है, और वे विदेह में नहीं, किन्तु मगधदेश की सीमा के भीतर आते हैं। महावीर की जन्मभूमि के समीप गंडकी नदी प्रवाहित होने का भी उल्लेख है। गंडकी, उत्तर बिहार की ही नदी है, जो हिमालय से निकल कर गंगा में सोनपुर के समीप मिली है। उसकी गंगा से दक्षिण में होने की संभावना ही नहीं। महावीर को आगमों में अनेक स्थलों पर वेसालिय (वैशालीय) की उपाधि सहित उल्लिखित किया गया है, (सू. कृ. १,२; उत्तरा ६) जिससे स्पष्ट होता कि वे वैशाली के नागरिक थे, जिसप्रकार कि कौशल देश के होने के कारण भगवान ऋषभदेव को अनेक स्थलों पर कोसलीय (कौशलीय) कहा गया है। इन्हीं कारणों से डा° हार्नले, जैकोबी आदि पाश्चात्य विद्वानों को उपर्युक्त परम्परा-मान्य दोनों स्थानों में से किसी को भी महावीर की यथार्थ जन्मभूमि स्वीकार करने में संदेह हुआ है, और वे वैशाली को ही भगवान की सच्ची जन्मभूमि मानने की ओर झुके हैं। पुरातत्व की शोधों से यह सिद्ध हो चुका है कि प्राचीन वैशाली आधुनिक तिरहुत मंडल के मुजफ्फरपुर

जिले के अन्तर्गत वसाढ़ नामक ग्राम के आसपास ही बसी हुई थी, जहां राजा विशाल का गढ़ कहलानेवाला स्थल अब भी विद्यमान है। इस स्थान के आसपास के क्षेत्र में वे सब बातें उचितरूप से घटित हो जाती हैं, जिनका उल्लेख महावीर जन्मभूमि से संबद्ध पाया जाता है। यहाँ से समीप ही अब भी गंडक नदी बहती है, और वह प्राचीनकाल में बसाढ़ के अधिक समीप बहती रही हो, यह भी संभव प्रतीत होता है। भगवान ने प्रव्रजित होने के पश्चात् जो प्रथमरात्रि कर्मार ग्राम में व्यतीत की थी, वह ग्राम अब कम्मन-छपरा के नाम से प्रसिद्ध है। भगवान ने प्रथम पारणा कोल्लाग संनिवेश में किया था, वही स्थान आजका कोल्हुआ ग्राम हो तो आश्चर्य नहीं। जिस वाणिज्यग्राम में भगवान ने अपना प्रथम व आगे भी अनेक वर्षावास व्यतीत किए थे, वही अब बनिया ग्राम कहलाता है। इतिहास इस बात को स्वीकार कर चुका है कि लिच्छिविगण के अधिनायक, राजा चेटक, इसी वैशाली में अपनी राजधानी रखते थे। भगवान का पैत्रिकगोत्र काश्यप और उनकी माता का गोत्र वशिष्ठ था। ये दोनों गोत्र यहां बसनेवाली जथरिया नामक जाति में अब भी पाए जाते हैं। इस पर से कुछ विद्वानों का यह भी अनुमान है कि यही जाति ज्ञातृवंश की आधुनिक प्रतिनिधि हो तो आश्चर्य नहीं। प्राचीन वैशाली के समीप ही एक वासुकुंड नामक ग्राम है, जहां के निवासी परम्परा से एक स्थल को भगवान की जन्मभूमि मानते आए हैं, और उसी पूज्य भाव से उस पर कभी हल नहीं चलाया गया। समीप ही एक विशाल कुंड है जो अब भर गया है और जोता-बोया जाता है। वैशाली की खुदाई में एक ऐसी प्राचीन मुद्रा भी मिली है, जिसमें वैशाली नाम कुंडे ऐसा उल्लेख है। इन सब प्रमाणों के आधार पर बहुसंख्यक विद्वानों ने इसी वासु-कुंड को प्राचीन कुंडपुर व महावीर की सच्ची जन्मभूमि स्वीकार कर लिया है, व इसी आधार पर वहां के उक्त क्षेत्र को अपने अधिकार में लेकर, बिहार राज्य ने वहाँ महावीर स्मारक स्थापित कर दिया है, और वहाँ एक अर्द्धमागधी पद्यों में रचित शिलालेख में यह स्पष्ट घोषणा कर दी है कि यही वह स्थल है, जहाँ भगवान महावीर का जन्म हुआ था। इसी स्थल के समीप बिहार राज्य ने प्राकृत जैन विद्यापीठ को स्थापित करने का भी निश्चय किया है।

महावीर के जीवन संबंधी कुछ घटनाओं के विषय पर दिगम्बर और

श्वेताम्बर परम्पराओं में थोड़ा मतभेद है। दिगम्बर परम्परानुसार वे तीस वर्ष की अवस्था तक कुमार व अविवाहित रहे और फिर प्रव्रजित हुए। किन्तु श्वेताम्बर परम्परानुसार उनका विवाह भी हुआ था और उनके एक पुत्री भी उत्पन्न हुई थी, तथा इनका जामाता जामाली भी कुछ काल तक उनका शिष्य रहा था। प्रव्रजित होते समय दिगम्बर परम्परानुसार उन्होंने समस्त वस्त्रों का परित्याग कर अचेल दिगम्बर रूप धारण किया था, किन्तु श्वेताम्बर परम्परानुसार उन्होंने प्रव्रजित होने से डेढ़ वर्ष तक वस्त्र सर्वथा नहीं छोड़ा था। डेढ़ वर्ष के पश्चात् ही वे अचेलक हुए। बारह वर्ष की तपश्चर्या के पश्चात् उन्हें ऋजुकूला नदी के तट पर केवलज्ञान प्राप्त हुआ और फिर तीस वर्ष तक नाना प्रदेशों में बिहार करते हुए, व उपदेश देतेहुए, उन्होंने अपने तीर्थ की स्थापना की, यह दोनों सम्प्रदायों को मान्य है। किन्तु उनका प्रथम उपदेश दिगम्बर मान्यतानुसार राजगृह के विपुलाचल पर्वत पर हुआ था तथा श्वेताम्बर मान्यतानुसार पावा के समीप एक स्थल पर, जहां हाल ही में एक विशाल मंदिर बनवाया गया है। दोनों परम्पराओं के अनुसार भगवान का निर्वाण बहत्तर वर्ष की आयु में पावापुरी में हुआ। यह स्थान पटना जिले में बिहारशरीफ के समीप लगभग सात मील की दूरी पर माना जाता है, जहां सरोवर के बीच एक भव्य मंदिर बना हुआ है।

क्रमशः

श्रावक जीवन

आचार्य श्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी

कुछ सावधानियाँ

अनर्थदंड विरमण व्रत का पालन सुचारू रूप से करने के लिए कुछ सावधानियाँ बरतने की होती हैं, अन्यथा व्रत को दोष-अतिचार लगते हैं और व्रत निःसार बन जाता है। यहां आज संक्षेप में ये सावधानियाँ बताकर प्रवचन पूर्ण करूंगा –

– पहली सावधानी है आर्तध्यान नहीं करते को। प्रिय-अप्रिय के संयोग-वियोग के विचारों में उलझना नहीं है।

– दूसरी सावधानी है रोग-व्याधि आने पर अभक्ष्य खाना नहीं है और मिथ्यात्वी देव-देवियों की शरण में जाना नहीं है।

– तीसरी सावधानी है, देशकथा, राजकथा, भोजनकथा और स्त्रीकथा नहीं करना। ये बातें मन को विकृत बनानेवाली होती हैं।

– चौथी सावधानी है-युद्ध करनेवालों की तारीफ नहीं करना। हिंसा के कार्य में गर्व-अभिमान नहीं करना।

– झूठ बोलने में अभिमान नहीं करना, शत्रु पर झूठा आरोप नहीं मढ़ना, अपनी झूठी प्रशंसा नहीं करना, यह है पांचवीं सावधानी।

– व्यापार में विश्वासघात नहीं करना, झूठी बही नहीं लिखना, जाली बात, जाली सौगन्ध वगैरह नहीं करना, यह है छट्ठी सावधानी।

– कोर्ट-कचहरी में झगड़ना नहीं। परिग्रह में मग्न नहीं रहना, यह है सातवीं सावधानी।

– पुनर्विवाह की तारीफ नहीं करना। यह है आठवीं सावधानी।

– नौवीं सावधानी है दशहरे में रावणवध नहीं करना, न देखना।

– दसवीं सावधानी है पानी छान कर उपयोग में लेना।

– ग्यारहवीं सावधानी है नेत्र विकारादि कामचेष्टा नहीं करना।

– बारहवीं सावधानी है बहुत नहीं बोलने की !

– तेरहवीं सावधानी है अधिक स्नान नहीं करने की, बार-बार नहीं खाने की ।

– चौदहवीं सावधानी है कटाक्षवचन नहीं बोलने की । विषयकषायपोषक वाणी नहीं बोलने की ।

– पंद्रहवीं सावधानी है अनावश्यक वनस्पति नहीं तोड़ने की, वनस्पति के ऊपर नहीं चलने की ।

परम उपकारी परम कृपानिधि महान् श्रुतधर आचार्यश्री हरिभद्रसूरिजी स्वरचित 'धर्मबिन्दु' ग्रंथ के तीसरे अध्याय में गृहस्थ–जीवन का विशेष धर्म बता रहे हैं ।

– पांच अणुव्रत और तीन गुणव्रत बताने के पश्चात् चार शिक्षाव्रत बताये जा रहे हैं । चार शिक्षाव्रतों में पहला शिक्षाव्रत है 'सामायिक' का । शान्ति, समता और चित्तस्वास्थ्य पाने का अमोघ उपाय है 'सामायिक' । अशांति, क्लेश, संताप और उलझनों से भरी हुई दुनिया में दो घड़ी विश्राम पाने का समय होता है सामायिक ! इसलिए सामायिक तो हर शान्तिप्रिय व्यक्ति को करना ही चाहिए । चाहे दूसरे व्रत लें या न लें, सामायिकव्रत तो जीवन में होना अति आवश्यक है । मन-वचन-काया का स्थैर्य और धैर्य पाने का दूसरा कोई अमोघ उपाय है ही नहीं ।

सुख चाहिए या शान्ति ?

परंतु मेरा पहला प्रश्न यह है कि आपको पहले भौतिक सुख चाहिए या मन की शान्ति ? यदि आपका ध्येय ज्यादा से ज्यादा भौतिक सुख पाने का है, शान्ति से मतलब नहीं है, तो 'सामायिक' की बात आपको जचनेवाली नहीं है । चूंकि सामायिक का संबंध शांति और समता के साथ है, भौतिक-वैषयिक सुखों के साथ नहीं है । भौतिक-वैषयिक सुख पाने के लिए दिन-रात जो लोग दौड़-धूप करते हैं वे लोग अशान्त हैं, बेचैन हैं...चिंताग्रस्त हैं...कषायपरवश हैं । फिर, भले ही वे मंदिरों में जाते हों या लाखों रूपयों का दान देते हों । भले ही वे महिने–दो महिने के उपवास करते हों...या वर्ष में ५/१० यात्रा करते हों तीर्थधामों की । यदि उन लोगों का लक्ष्य धन-दौलत और वैषयिक सुख पाने का है, वे अशान्त ही रहेंगे । तीर्थस्थानों में भी उनको शान्ति मिलेगी नहीं । चाहते ही नहीं शान्ति, फिर मिलने का

प्रश्न ही नहीं उठता ! हाँ, फरियाद करते रहते हैं : हमें शान्ति नहीं मिलती है । हम माला फेरते हैं, मंदिर जाते हैं...तीर्थयात्रा करते हैं...हमें शान्ति नहीं मिलती है । कैसे मिलेगी शान्ति ? वैषयिक सुखों की भरपूर स्पृहा हृदय में भरकर, उन सुखों को पाने का ही प्रयत्न करनेवालों को शान्ति नहीं मिलेगी । चूंकि वैषयिक सुखों की स्पृहा के साथ कषायों की प्रबलता बढ़ती जाती हैं । क्रोध, मान, माया और लोभ की परिणती बढ़ जाती है । और, ये कषाय शान्ति के शत्रु हैं !

विषय-कषायों को सीमित करने होंगे :

सर्वप्रथम अपनी आत्मा से पूछो : शान्ति चाहिए क्या ? मन की शान्ति की उपेक्षा करनेवाले और विषयसुखों की तीव्र स्पृहा करनेवाले लोग दिमाग से अप-सेट हो जाते हैं...कुछ लोग तो पागल हो जाते हैं । लाखों रूपये और सभी प्रकार की सुविधायें होने पर भी वे लोग व्यथित और पीड़ित होते हैं । क्या आपको वैसी स्थिति का निर्माण करना है ? नहीं न ? तो वैषयिक सुखों की तीव्र स्पृहा का त्याग करो । कषायों से बचते रहो । कषायों से बचने का उपाय यही है–वैषयिक स्पृहा का त्याग । इसलिए 'भोगोपभोग विरमण व्रत' और 'अनर्थदंड विरमण व्रत' बताये गये हैं । ये दो व्रत, मनुष्य की वैषयिक इच्छाओं को सीमित करते हैं । वैषयिक इच्छायें सीमित होने से कषायों की प्रबलता नहीं रहती है । इस से 'सामायिक' अच्छा होता है । मन-वचन-काया को सामायिक में स्थिरता और प्रसन्नता प्राप्त होती है ।

सामायिक क्या है :

सामायिक व्रत दो घड़ी प्रतिदिन करने का व्रत है । शुद्ध और शान्त जगह ४८ मिनट बैठना है । शुद्ध वस्त्र पहनकर बैठना है । ऊनी वस्त्र जमीन पर बिछा कर बैठना है । मुँहपत्ति रखना है और चरवला रखना है पास में । बोलना पड़े तो मुँहपत्ति का उपयोग करना होता है, चलना पड़े तो चरवले का उपयोग करना होता है ।

हो सके वहां तक शरीर को स्थिर रखना है यानी शरीर को चंचल-अस्थिर नहीं होने देना है । एक आसन से बैठना है । उबासी भी नहीं आये, वैसे बैठना है । भित्ति का सहारा लिये बिना बैठना है ।

वैसे, मौन धारण कर बैठना है । बोलना नहीं है । यानी निरर्थक, निष्प्रयोजन और पापयुक्त वचन नहीं बोलने के हैं । कभी बोलना ही पड़े

तो प्रिय, सत्य और स्व-परहितकारी वचन ही बोलने चाहिए। इस प्रकार वचनयोग की निर्मलता सिद्ध करना है। काययोग और वचनयोग चापल्यरहित और पापरहित बनेंगे तभी मनोयोग निर्मल-पवित्र बनेगा।

मन में एक भी पापविचार नहीं आ जाय, इसलिए मन को मंत्र-जाप में अथवा स्वाध्याय में जोड़ देना चाहिए।

प्रश्न : जब मंत्रजाप करने लगते हैं तभी पापविचार ज्यादा आते हैं ! फालतू विचार ज्यादा आते हैं।

महाराजश्री : चूंकि मन को मंत्र के साथ जोड़ने की कला आपने पायी नहीं है। मन को मंत्र के साथ जोड़ कर देखना ! एक भी दूसरा विचार मन में प्रवेश नहीं कर पायेगा। मन को मंत्र के साथ जोड़ कर जाप शुरू करें। जैसे कि आप श्री नवकार मंत्र का जाप करना चाहते हैं, तो आप उस महामंत्र के अक्षरों में मन को जोड़ो। सभी ६८ अक्षरों को श्वेत (White) देखने का प्रयत्न करो। मन को कह दो कि 'तुम्हें सभी अक्षर श्वेत ही देखने के हैं। अक्षर को देखते हुए जाप करने का है।' मन से देखना है, आंखों से नहीं। आंखें तो नासिका के अग्र भाग पर स्थिर करने की हैं अथवा बंद रखने की हैं। मन देखने का काम करेगा तो दूसरे विचार नहीं करेगा !

वैसे मन को कमल के पुष्प के साथ जोड़ सकते हैं। आठ पंखुड़ियों वाला कमल देखना है और उस में श्री नवकार मंत्र के नौ पदों को स्थापित कर जाप करना है। कमल सुंदर पुष्प होता है। मन को सुंदर वस्तु ज्यादा पसंद होती है न ! उस को कमल के साथ जोड़ दो !

मन को यदि सुंदर दृश्य देखने में मजा आता है, तो उस को तीर्थंकर परमात्मा के समवसरण में ले चलो ! समवसरण देखने दो ! समवसरण की शोभा अद्‌भूत होती है। इस से भी ज्यादा शोभा होती है तीर्थंकर परमात्मा की। वहां पर मन को पंचपरमेष्ठि के ध्यान में जोड़ दो। मन को जोड़ना होगा, अन्यथा वह शुभ भावों को तोड़ेगा...और आत्मा को बिगाड़ेगा।

सामायिक में यही काम करना है-मन-वचन-काया के योगों को शुभ बनाने का। निष्पाप बनाने का। दो घड़ी भी ये तीन-मन-वचन और काया निष्पाप बने रहें...तो फिर आगे ज्यादा समय भी निष्पाप रह सकते हैं।

क्रमशः

राजा सम्प्रति

आशा के झूले में

"वत्स ! आज यदि तू उज्जयिनी के सिंहासन पर होता तो इस बालक के जन्म का कैसा महोत्सव होता ? फिर भी बालक भाग्यशाली है, यही सन्तोषकी बात है।" पुत्रका जन्म होने के बाद एकदिन अवसर पाकर सुनन्दा ने कुणाल से कहा; किन्तु इस कथन में उसका हेतु कुछ और ही था।

"कुमार कैसा सुन्दर और सलौना है। यदि प्रभु इसे देख सकने के लिए आपको फिर से नेत्र प्रदान करें तो कितना अच्छा हो ! इस बालक के सुन्दर मुखको आँखोंसे दूर करने की भी इच्छा नहीं होती।" चन्दाने बीच में कहा।

"चाहे जितना सुन्दर क्यों न हो; किन्तु अब यह कोई राजा थोड़े ही बन सकता है ?" कुणाल ने कहा।

"क्यों नहीं बन सकता ? राजा का कुँवर क्या राजा नहीं बन सकता ?" सुनन्दा ने जोश भरे शब्दों में कहा।

"अवश्य ही राजाका कुँवर राजा हो सकता है, किन्तु इस समय तो मैं कोई राजा नहीं हूँ कि जिसके राज्य का यह उत्तराधिकारी हो सकेगा !" कुणाल ने कहा।

"तुम चाहे जो भी कहो ! किन्तु मुझे तो यह बालक महान् भाग्यशाली जान पड़ता है। ऐसा बत्तीस लक्षण-युक्त भाग्यवान पुत्र यदि महान् राज्य का स्वामी न बन सके, तो यही समझना चाहिए कि विधाता भी कभी-कभी भूल कर जाता है।" चन्दा बीचही में बोल उठी।

"चन्दा ! यदि प्रभू की इच्छा होगी तो तेरी और मेरी आशा भी अवश्य पूर्ण होगी। हमारे मनोरथ सफल होंगे।" सुनन्दा ने कहा।

"तुम स्त्रियों को जीवित रहने के लिए किसी न किसी आशा का अवलम्बन तो होना ही चाहिए ने ! इसलिए खुशीसे तुम अनेक प्रकारके हवाई किले बाँधती रहो।" कुणाल ने कहा।

इतने ही में शरत कुमारी ने आकर बालक को सुनन्दा की गोद में लिटा दिया। अतः उसने कुणाल से कहा :- वत्स ! तू जो भी चाहे कह सकता है; किन्तु इसका भाग्य तो निश्चित ही महान् है। देख तो सही गोदी में भी यह कितना तूफान कर रहा है।" इसके बाद उस शिशुको प्रेमसे पुचकारते हुए सुनन्दा ने उसे कुणाल की गोद में लिटा दिया। "ले, यह तेरा लाड़ला पुत्र ! जरा खिला इसको ! इसके मक्खन जैसे सुकोमल शरीर पर भी हाथ तो फिरा !"

कुणाल अपनी गोद में लेटे हुए उस बाल शिशु के शरीर पर हाथ फिराता हुआ उसका प्रेम-पूर्वक लाड़दुलार करने लगा। वह चपल वृत्तिवाला बालक गोद में भी इधर-उधर उछल रहा था। वह हाथ-पैर पटकता हुआ लोटने लगा। बालक के मुखपर मधुर मुसकान थी। मानों वह मुसकुराहट शत्रुको भड़कानेवाली बालोचित-चुनौती ही न हो !

गोदी में खेलाते हुए बालक को सम्बोधन करके कुणालने कहा :- "बच्चे ! मेरे बदले यदि तू मेरे पिता के यहाँ जन्मा होता तो कदाचित् किसी बड़े राज्यका स्वामी बन सकता था ! अथवा युवराज महेन्द्र कुमार के यहाँ जन्म लेनेपर भी तू भविष्य में अपना अधिकार निश्चित कर सकता था; किन्तु कोई चिन्ता नहीं। दैवने यदि तुझे मेरे यहां जन्म दिया है तो ठीक है। परन्तु अब मैं तेरे हित के लिए क्या उपाय करूँ ?"

इसके हितके लिए तू एक काम कर ! बेटा, बहुत दिनों से मेरे मन में तेरे पुत्र का मुख-देखने की अभिलाषा थी; उसे तो भगवान ने पूरी करदी। अब रही हुई एक अभिलाषा तू पूर्ण कर !"

"कौन ! मैं ? माता ! कहो, मैं नेत्रहीन मानव तुम्हारी किस अभिलाषाको पूर्ण करूँ ? यदि बन सकने जैसी हुई तो उसे अवश्य पूर्ण करूँगा।" जिज्ञासा पूर्वक कुणाल ने कहा।

"यदि तू मन में धारले तो अवश्य पूर्ण कर सकेगा और उसे पूर्ण करने में ही हमारी उन्नति सम्भव है। हमारे उत्कर्ष की आशा भी उसी में समाई हुई है।" सुनन्दा ने बतलाया।

"बतलाओ ! झटपट बतलाओ ! वह कौन-सी आशा है।" कुणाल ने पूछा।

"उसे मैं एकदम नहीं बताऊँगी । पहले तू मुझे वचन दे कि मैं जैसा कहूँ, वैसा ही करेगा !"

"मुझ से हो सकेगा, वहाँतक अवश्य तुम्हारे वचन की पूर्ति करूँगा ।" कुणाल ने कहा ।

"पुत्र ! अब मेरी केवल एक ही इच्छा है कि एकबार तू पाटलीपुत्र में जा !"

"पाटलीपुत्र में ? वहाँ जाकर मैं क्या करूँगा ? माता !" उत्सुकता से कुणाल ने पूछा ।

"तू अपनी सङ्गीतकला से मगधपति को प्रसन्न करके अपने पुत्र के लिए राज्य की माँग प्रस्तुत कर ।"

सुनन्दा के वचन सुनते ही कुणाल की आँखें चमक उठीं, वह विचार में पड़ गया । "वत्स, क्या विचार कर रहा है ? तू प्रयत्न कर ! मेरा यह बालपुत्र दीर्घकाल पर्यन्त संसारका ऐश्वर्य भोगेगा । हम सबके मनोरथ यह पूर्ण करेगा !" सुनन्दा ने फिर कहा ।

"कुमार ! क्या विचार कर रहे हो ? तुम्हारी अपर माता हमारा सर्वनाश करके प्रसन्न हो रही है; किन्तु उसके मनोरथ को निष्फल करने का अब समय आगया है ।" चन्दा बीच में बोल पड़ी । सुनन्दा के वचन सुनकर उसकी मृत आशा सजीवन हो उठी थी । चन्दा के वचन से उसका उत्साह बढ़ गया ।

अपनी हवेली में बैठा हुआ यह परिवार इस प्रकार भविष्यकाल की कल्पना में निमग्न था । कुणाल सीढ़ियों के पास ही बैठा था । अतएव बालचापल्य वश वह गोद में से उछलकर नीचे गिर पड़ा और सीढ़ियों पर लुढ़कता हुआ नीचे जमीनपर जा पहूँचा । वह एकदम रोने लगा । शरत कुमारी तो चींख मारकर मुर्छित हो गई । सुनन्दा भी उसके पीछे दौड़ती हुई नीचे जा पहुँची और उसके पीछे-पीछे चन्दा एवं अन्य दास-दासी भी हाथ का काम छोड़कर तत्काल वहाँ आ पहुँचे । अररर ! यह क्या अनर्थ हुआ ! दैवने यह कैसा कोप किया ? अमूल्य रत्न दिखाकर फिर छीन लिया ! इस प्रकार हाय-हाय करते हुए वे बालक को देखने लगे तो वह नीचे पड़ा हुआ बालक किलक रहा था । अतः आते ही सुनन्दा ने उसे एकदम उठा

लिया । सबलोग उसके शरीर को इधर-उधर टटोलकर देखने लगे, किन्तु उसे कहीं भी कोई चोट आदि नहीं लगी थी । हनुमान और भीमकी तरह पुण्यबल में ही वह सुदृढ़ शरीर लेकर जन्मा था ! सुनन्दा की गोद में रहते हुए भी वह उसका बाल चापल्य-उछल-कूद चला ही रहा था । वह हाथ-पाँव उछालकर सुनन्दा को भी हैरान कर देता था ! चोट का कोई चिह्न उसके शरीर पर न था ।

बालक को किलकता देखकर सबका कल्पान्त फिर आनन्द में परिवर्तित हो गया ! कुणाल भी चिन्ता-मुक्त हो प्रसन्न हो गया । शरत कुमारी जो बेहोश थी, उसे भी सचेत कर बालक को उसकी गोद में देते हुए सुनन्दा बोली:- "ले, तेरा यह बालक !"

अपने पुत्र को सब तरह से सुरक्षित पाकर उसके जी में जी आया । उसने बालक को छाती से लगाकर बार-बार चूमा । माता के लाड़ प्यार से शिशु का मुँह खिल उठा । वह फिर गोद में हाथ-पाँव हिलाने लगा ।

बालक को इतनी ऊँचाई से गिरने पर भी कहीं कोई चोट नहीं लगी; यही नहीं वरन् उसके शरीर पर कहीं किसी प्रकार का चिह्न तक नहीं दिखाई दिया और न उसके मनपर इसका कोई चिह्न ही दृष्टिगोचर होता था । सबको यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि इतनी ऊँचाई से गिरकर भी वह पहले की ही तरह खेल रहा है । अतएव निश्चित ही आगे चलकर यह कोई महा पराक्रमी पुरूष सिद्ध होगा । अगणित शत्रुओं का मानमर्दन करनेवाला विजयी वीर बनेगा । यह देखकर सुनन्दा का हृदय फूला नहीं समाया । उसने कहा :- "बेटा कुणाल ! देखा तेरे बालशिशु का पराक्रम ! इतनी ऊँचाई से गिरनेपर भी यह हँसता हुआ ही खेल रहा है । अभी से इसका शरीर इतना सुदृढ़ है, तब बड़ा होनेपर तो यह अपने पराक्रम से अवश्य अपना राज्य प्राप्त कर सकेगा । फिर भी बेटा, तुझे एकबार प्रयत्न तो अवश्य करना चाहिए । तेरा परिश्रम और मेरे इस बालकुमार का भाग्य, मरने से पहले मैं इतना तो कम-से-कम देखलूँ ।"

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English			
1.	*Bhagavati-sütra* – Test edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;		
	Vol-I (śatakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol-II (śatakas 3-6)		150.00
	Vol-III (śatakas 7-8)		150.00
	Vol-IV (śatakas 9-11)		150.00
2.	James Burges – *The Temples of Śatruñjaya*, Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates	Price : Rs.	100.00
	[It is the glorification of the sacred mountain *Śatruñjaya.*]		
3.	P.C. Samsukha – *Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	10.00
4.	Ganesh Lawani – *Thus Sayeth Our Lord*		10.00
Hindi			
5.	Ganesh Lalwani – Atimukta (2nd edn.) translated by Shrimati Rajkumari Begani		40.00
6.	Ganesh Lalwani – Śraman Samskriti ki Kavitä		20.00
7.	Ganesh Lalwani – Nílänjanä translated by Shrimati Rajkumari Begani		30.00
8.	Ganesh Lalwani – Candana-Mürti, translated by Shrimati Rajkumari Begani		50.00
9.	Ganesh Lalwani – Vardhamän Mahavír		60.00
10.	Ganesh Lalwani – Barsät kí Ek Rät		45.00
11.	Ganesh Lalwani – Pañcadaśí		100.00
12.	Rajkumari Begani – Yädó ke Äine më		30.00
Bengali			
13.	Ganesh Lalwani – Atimukta		40.00
14.	Ganesh Lalwani – Śraman Samskrti Kavitä		20.00
15.	Puran Chand Shyamsukha – Bhagavän Mahävír O Jaina Dharma		15.00

तित्थयर

जिन धर्म और संस्कृति की महक से
सुरभित करने वाली पत्रिका तित्थयर (मासिक)
के आजीवन सदस्य बनें ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- एक हजार रूपये

JAIN JOURNAL

One of its Kind, most Valuable,
Quaterly research Journal
on Jainism

Life Membership – Rs. 2000/-
Yearly – Rs. 60/-

श्रमण

बंगाल की भूमि में जैन संस्कृति के
गौरव का प्रतीक श्रमण (बंगला) के
आजीवन सदस्य बनिये ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- पाँच सौ रूपये
वार्षिक शुल्क- तीस रूपये

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College
Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG Pvt. Ltd.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi - 110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsni.net.in

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।
Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office
2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333, Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

IN THE MEMORY OF LATE
Jitendra Singh Nahar, Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 242-7806/8835/5852
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 250623, (R) 239-6823

SANA FASHIONS
A20/21 Laghu Udyog
I.B. Patel Road, Goregaon East, Bombay - 400 063

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 255009/1299, (R) 660-4332

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

MAHASINGH RAJ MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

KASTURCHAND VIJAYCHAND
155, Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-7713

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 26-3028, 27-4039

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East, Calcutta - 700 069

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta - 700 007

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 278841/7539, (R) 475-9712/2807

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072, Ph : 215-1297, 26-4230/4240

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071, Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

AAREN EXPORTERS
12A, Netaji Subhas Road, 1st Floor, Room No. 10
Calcutta - 700 001, Phone : 220-1370/3855

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38, Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 25-7312, Shop : 230-1180, Resi : 241-6831

SIDDHA NIKETAN
Goldel Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

G. M. SINGHVI
M/S. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248-7476-8, (R) 475-4851/1483
Fax : 248-8184

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 247 1833

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Ph: 25-7927/3816/6734, Resi : 240-0440

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row, 3rd Floor, Room no. 14,
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

HARAK CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

S.C. SUKHANI
Santiniketan Building, 4th Floor, Room No. 14
8, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : (O) 242-0525 (R) 239-9548
Fax : 242-3818

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor
Calcutta - 700 007, Phone : 238-7764
Resi : 666-4541, 530-9286

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

KUSUM CHANACHUR
Prop. Churoria Brothers
Mfg. by : K. C. C. Food Product
P.O. Ajimganj, Dist. : Murshidabad
Phone: STD (03483)-53234
Calcutta- 230-0432, 231-2802

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

KALURAM RAMLAL
40A, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Phone : 238-9089/239-1264

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

A.M. BHANDIA & CO.
23/24 Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 242 1022/6456/555-4315 (R)

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 245-1612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

SATISH KUMAR SHYAMSUKHA
11, Pollock Street, Calcutta - 700 001

NARENDRA JAIN
Super Iron Factory
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 665-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 230-0216, (R) : 259657, 259312

GRAPHIC PRINT & PACK
12C, Lord Sinha Road, Calcutta - 700 071
Phone : (O) 242-4916/8380
Resi : 343-8302, Pager : 6902-315070

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J.L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

CHOPRA TYRES
Unit of Fatehchand Chopra & Family
Tyre Resoler
Sakunta Road, Agartala, (Tripura)

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 295047, 299110

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & Bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : (O) 242-3870/4521, Fax : 242-8621

J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 220-3142, Resi : 475-0995, 476-1803
Fax : 221-4131

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

DUGAR & CO. JUTE BROKER
12, India Exchange Place, (3rd Floor)
Calcutta - 700 001
Phone : 220-1283/0813, Resi : 555-6039

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 242-5234/0329

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane, Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 244-0629/0319

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Calcutta -700 007, Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 262210

मथुरा के जैन स्तूप इस बात के
स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि
जैन धर्म प्राचीन है और
प्रारम्भ में भी वर्तमान स्वरूप में था ।

Shri Vinsent Smith

卐

RADHIKAS

ICE CREAM PARLOUR & FAST FOOD CENTRE

SHIVAM CHAMBERS
53, Syed Amir Ali Avenue
(Near Ice Scating Rink)
Calcutta - 700 019
Phone : 247-2602

THE PURE VEGETARIAN PARLOUR FOR CHOICEST & TASTIEST IDLIS, DOSAS, BURGERS, CHATS AND MANY MORE DELICIOUS FOODS WITH VARITIES OF ICE-CREAMS.

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है,
जैन दर्शन भी मनुष्य दर्शन ही है,
जिन देवता नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे ।

Prof. Harisatya Bhattacharya

We are, always ready to most the Exact type of your requirement

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

'KANKARIA ESTATE'

6, Little Russel Street
Calcutta - 700 001

A Recognised Export House
Cable : SWANAUCK, CALCUTTA
Telex : 21-2396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone : 29-2621, 2623, 7199, 7698, 7710

Registered Office &
'JUTE MILL'
At Jagatdal, 24 Parganas
Phone : BHATPARA 2757, 2758 & 2038

एतिहासिक सामग्री से यह सिद्ध होता है कि आप से पांच हजार वर्ष पहले भी जैन धर्म की सत्ता थी ।

Dr. Prannath (Historian)

GYANI RAM HARAKH CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST

P-8, Kalakar Street
Calcutta - 700 007
Phone : 239-6205/9727

Founders of

Shri Gyaniram Harakchand Saraogi College of Arts & Commerse
Sujangarh

Shri Gyaniram Saraogi Homeo Hall

Shri Gyaniram Saraogi Physiotherapy Centre

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

卐

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र के गुण नहीं होते। गुणों के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति बिना निर्वाण शाश्वत् आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC - 330

VOL XXII No. 7

'Titth ayara'

Registered with the registered of Newspapers for India under No. R.N. 3018/77

October 1998

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहु सरणं पवज्जामि
केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

"आत्मा के साथ ही युद्ध करो, बाहरी दुश्मनों के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा के द्वारा ही जीत कर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है।"

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225